This is the subtitle of PDF, Use long text here.

नाम :- डॉ॰ सुजाता गुप्ता
वर्ग – इन्टरमीडिएट XII (अंक-100)
विभाग – हिंदी
शीर्षक – द्विवेदी युग की काव्यगत प्रवृत्तियाँ

द्विवेदी युग की काव्यगत प्रवृत्तियां

द्विवेदी युग की सामान्य प्रवृत्तियाँ (काव्य के संदर्भ में)

यह युग कविता में खड़ी बोली के प्रतिष्ठित होने का युग है। इस युग में ब्रजभाषा को छोड़कर खड़ीबोली में रचनाएँ होने लगी। अपनी विकसित चेतना के कारण कविता में नए-नए भावबोध का आगमन हुआ। खड़ी बोली को ब्रजभाषा समकक्ष लाया गया। यह नयापन स्वच्छंदता की नयी प्रवृत्ति थी, और रीतिकालीन काव्यों के प्रति विद्रोह की भावना थी।

① इतिवृत्तात्मकता :-

अर्थात् काव्य में वस्तुवर्णन तथा आख्यान को मुख्य रूप से अपनाया गया। वर्णन को प्रमुखता देते हुए, प्रबन्धात्मक रचनाओं का प्रचलन बढ़ा। 'प्रियप्रवास' और 'वैदेही वनवास' आदि रचनाओं में इतिवृत्तात्मकता की प्रधानता है।

② देश प्रेम

इस युग के कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्र भक्ति की लहर चलाई। जनता के हृदय में देशप्रेम का संचार किया। अपनी समस्याओं के कारण ढूंढने से लेकर, उनके समाधान ढूंढने का कार्य किया।

"हम क्या थे, क्या हो गए और क्या होंगे अभी।
आओ मिलकर विचारें ये समस्याएं सभी।"

यह युग अपनी समृद्ध संस्कृति के विरासत पर गर्व

This is the subtitle of PDF, Use long text here.

और अपनी अस्मिता पर प्राप्त करने लिए प्रेरणादायक भी रहा। उदाहरण, गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' की कविता का एक अंश द्रष्टव्य है :-

"जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है
वह नर नहीं नर पशु निरा है और मृतक समान है।"

③ सामाजिक समस्याओं का चित्रण

यह सुधारवादी युग भी कहलाया। इस युग के कवियों ने नारी उत्पीड़न, छुआछूत, बालविवाह आदि अनेक सामाजिक समस्याओं को अपनी कविता का विषय बनाया। भारतीय नारी के जीवन की मार्मिक व्याख्या, मैथिलीशरण गुप्त की इन पंक्तियों में उल्लिखित है :- "अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।"

द्विवेदी युग में उपेक्षित नारियों को काव्य में स्थान दिया गया है। 'यशोधरा' के माध्यम से बुद्ध की पत्नी, 'उर्मिला' के माध्यम से लक्ष्मण की पत्नी और 'विष्णुप्रिया' के माध्यम से चैतन्य महाप्रभु की पत्नी के बलिदान और उपेक्षित जीवन का चित्रण मिलता है।

"सखी वे मुझको कहकर जाते,
प्रियतम के प्राणों को पथ में स्वयं सुसज्जित करके।
भेज देती रण में, क्षत्र धर्म के नाते
सखी वे मुझको कहकर जाते।"

'प्रियप्रवास' तथा 'वैदेही वनवास' में भी इसी नारी वेदना की संध्वनित छाया मिलती है।

—— जारी है